दादा भगवान परिवार का

मार्च - २०२०

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

सेल्फ नेगेटिविटी

संपादकीय

बालमित्रों,

पिछले महीने के अंक में हमने पॉज़िटिव रहना सीखा था। याद है न?... बहुत अच्छा...

अब और सभी के लिए तो हम पॉज़िटिव हो गए लेकिन खुद के लिए अभी भी हमें नेगेटिविटी रहा करती है जैसे कि मैं यह नहीं कर पाऊँगा, मुझे नहीं आएगा, ना, रे बाबा... यह मेरा काम नहीं है आता वगैरह वगैरह...

तो चलो, हम इसमें से भी बाहर निकल जाएँ। बहुत ही आसान है। आपको सिर्फ इस अंक को ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है। इसमें दी गई सुंदर समझ जीवन में अपनाते जाओ और सेल्फ नेगेटिविटी से बाहर निकलते जाओ।

\- डिम्पलभाई मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ७ अंक: १२
अखंड क्रमांक: ८५
मार्च - २०२०

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : पूज्यश्री, मुझे सेल्फ नेगेटिविटी बहुत होती है।

पूज्यश्री : किस बात में?

प्रश्नकर्ता : घर में कोई काम रहता है न, तो यदि काम नहीं आता या नहीं कर पाती हूँ तो डर लगता है कि मम्मी बोलेंगी। कोई भी काम हो तो मुझे पहले ही बहुत नेगेटिव होता है।

पूज्यश्री : चाहे थोड़े कम काम होते हो लेकिन जितने करते हो उतने तो ठीक से होते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, एकाध ही बिगड़ जाता है लेकिन फिर भी डर लगा रहता है।

पूज्यश्री : जब बिगड़ता है तब मम्मी से तुरंत पूछते हो न? पूछकर सॉल्यूशन ला सकते हैं न?

प्रश्नकर्ता : ला सकते हैं।

पूज्यश्री : तो फिर धीरे-धीरे वैसा ही करना। घबराना मत कि मेरा काम बिगड़ जाएगा, बिगड़ जाएगा। नहीं तो फिर और ज्यादा बिगड़ेगा। हम सॉल्यूशन लाएँगे। मम्मी को देने से पहले थोड़ा शांति से चेक कर लेना। या फिर मम्मी से पूछ लेना कि ऐसा करना है न?

यह ठीक है न? यह तो कैसा है कि ठीक ही करते हो लेकिन डर की वजह से उल्टा-सीधा हो जाता है। हमें धीरे-धीरे इस डर में से निकल जाना है। और फिर भी यदि भूल हो भी जाए तो सुधार लेना। बिगड़ने नहीं देना है और घबराना भी नहीं है।

पसंद नहीं है न, यही आपकी नेगेटिविटी है। काम बिगड़ने की शुरुआत ही वहीं से होती है।

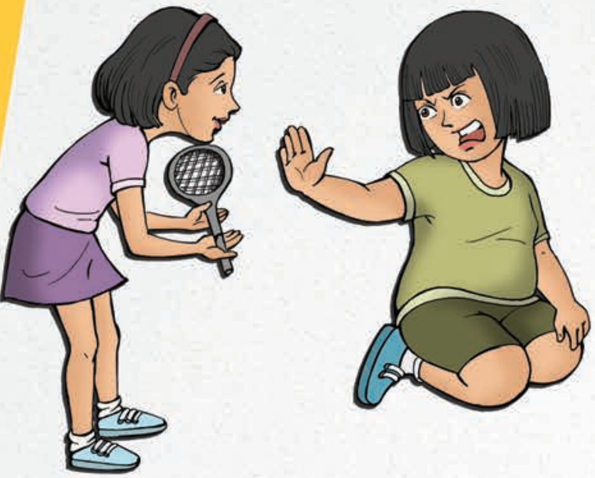

हर एक विफलता अनुभव देकर जाती है। तो इसमें निराश क्यों होना?

यह तो नई ही

प्रार्थना
नेगेटिविटी से
निकलने का उत्तम उपाय
है। अंदर वाले भगवान
से शक्ति माँगो और
देखो फिर चमत्कार!

जो
काम मिला है
यदि उससे
भागोगे नहीं तो
सफलता मिलेगी ही। और
साथ ही साथ सेल्फ
कॉन्फिडेन्स भी बढ़ता
जाएगा।

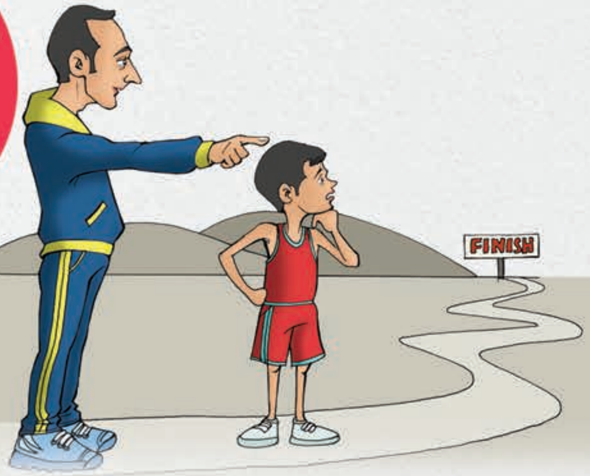

बात है!

ब्रोंज मेडल

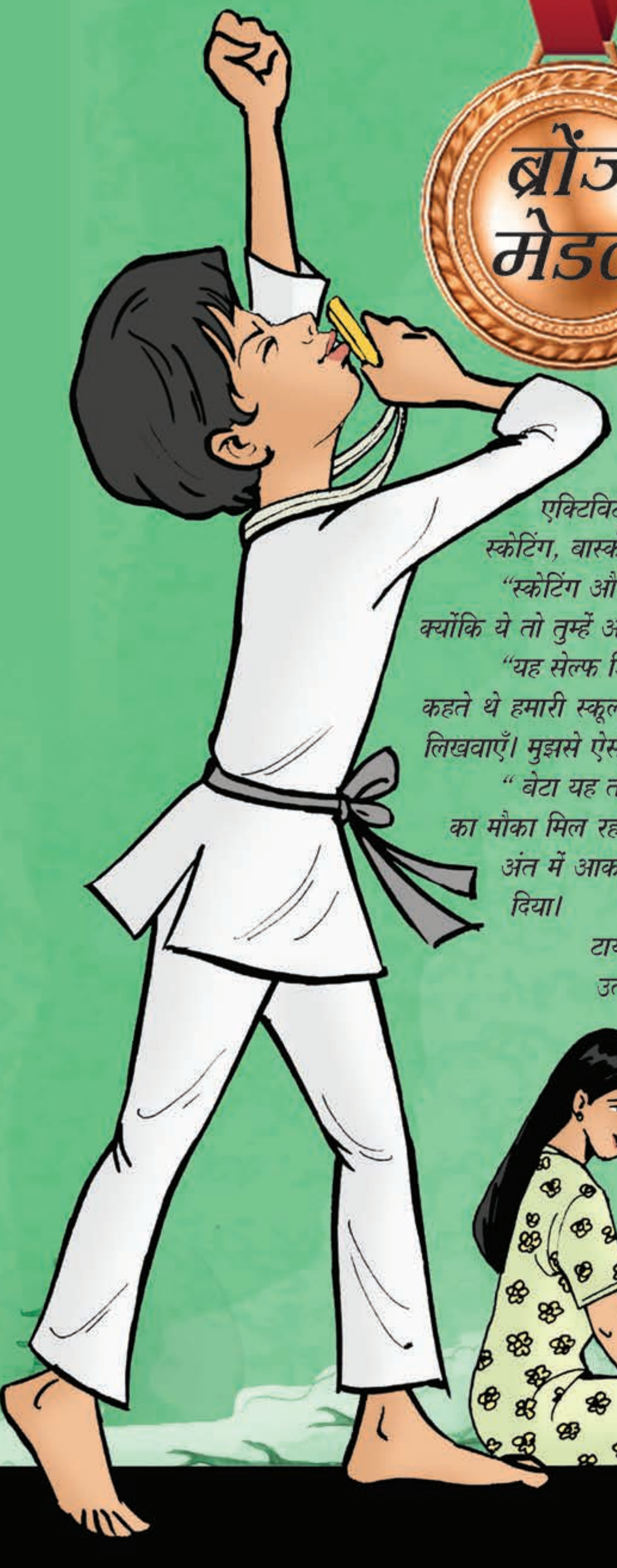

आकाश के हाथ में ब्रोंज मेडल था और चेहरे पर बेहद आनंद था। इससे पहले उसे इतनी ज्यादा खुशी कभी नहीं हुई थी। क्या यह मेडल जीतने की खुशी थी पर गोल्ड मेडल तो जीता नहीं था लेकिन उसकी खुशी गोल्ड मेडल जीतने वाले स्टूडेन्ट से भी ज्यादा थी। उसका क्या कारण होगा?

आकाश ने अपना मेडल संभालकर अलमारी में रख दिया। वहीं पास में ही उसकी पर्सनल डायरी रखी हुई थी। उसने वह डायरी हाथ में ली और दो साल पहले का समय उसकी आँखों के सामने तैरने लगा....

"मम्मी इस बार स्कूल में हमें एक स्पोर्टस एक्टिविटी में नाम लिखवाना ज़रूरी है। उसमें तीन चॉइस हैं। स्केटिंग, बास्केट बॉल और टायक्वोंडो। मैं कौन सा सिलेक्ट करूँ?"

"स्केटिंग और बास्केट बॉल के अलावा तुम्हें जो लेना हो वह ले लो क्योंकि ये तो तुम्हें आते हैं न? टायक्वोंडो क्या है?"

"यह सेल्फ डिफेन्स के लिए है। जैसे कराटे होता है ना, वैसे ही। सर कहते थे हमारी स्कूल में पहली बार करवाने वाले हैं, तो सभी इसमें नाम लिखवाएँ। मुझसे ऐसी फाईट वाली गेम नहीं सीखी जाएगी।

" बेटा यह तो सेल्फ डिफेन्स टेक्निक है और तुम्हें कुछ नया सीखने का मौका मिल रहा है तो उसे गँवाना नहीं चाहिए।"

अंत में आकाश ने और ज्यादा सोचे बिना अपना ना उसमें लिखवा दिया।

टायक्वोंडो क्लास का पहला दिन था और सभी बच्चे उत्साहित थे। जैसेही आकाश क्लास में दाखिल हुआ कि तुरंत कुछ बच्चे हँसने लगे।

"हेय आकाश... तु फाईट करने वाला है?" कलरव ने तुरंत ही पूछा।

"तेरे जैसे सुकलकड़ी का काम नहीं है इसमें।" निहार ने आकाश के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

यह सुनकर आकाश अंदर से कमज़ोर पड़ गया। उसे सभी के बीच अजीब सा लगने लगा।

आकाश क्लास के सबसे पतले लड़कों में गिना जाता था। इसीलिए सभी हमेशा उसकी मज़ाक उड़ाते थे।

इतने में सर क्लास में आए और सभी शांत हो गए। सर के हाथों में वे वेईंग मशीन था।

"चलो, एक के बाद एक आकर सभी अपना वज़न करवा लो।"

सभी ने लाईन से अपना वज़न करवाया। सभी ने स्ट्रेचिंग और कुछ अन्य एक्ससाईज़ की और थोड़ी देर में ही थक गए। आकाश तो बहुत ही थक गया था।

"सर, पानी।"

"नहीं अभी कोई भी पानी नहीं पीएगा। चलो, सभी बैठ जाओ और के गेम के रुल्स समझ लो।" सर ने स्ट्रिक्ट होकर कहा।

सर ने जितना भी समझाया उसमें से एक भी शब्द आकाश के काम में नहीं गया क्योंकि उसका मूड बहुत ही खराब हो गया था। उसके लिए यह बहुत कठिन था और उसे ऐसा लगने लगा कि टायक्वोंडो में नाम लिखवाकर उसने गलती कर दी है।

घर आकर आकाश ने तुरंत ही मम्मी को स्कूल की डायरी देते हुए कहा, " मम्मी इसमें एक नोट लिखनी है कि मुझे टायक्वोंडो के बदले स्केटिंग या बास्केट बॉल में नाम लिखवाना है।"

मम्मी ने बहुत समझाया फिर भी वह नहीं माना इसलिए मम्मी ने नोट लिख दिया और दूसरे दिन स्कूल में जाकर सर को दिखाया।

"एक बार सिलेक्शन करने के बाद गेम चेन्ज नहीं होगा, यह पहले ही कहा था न?"

"लेकिन सर.... प्लीज।" आकाश की बात सर ने नहीं मानी।

ऐसा करते-करते चार महीने बीत गए। आकाश मजबूरन टायक्वोंडो क्लास में जाता।

"मम्मी आज टायक्वोंडो टूर्नामेन्ट का सिलेक्शन था।" आकाश ने उदास चेहरे से कहा।

"तुम सिलेक्ट नहीं हुए?"

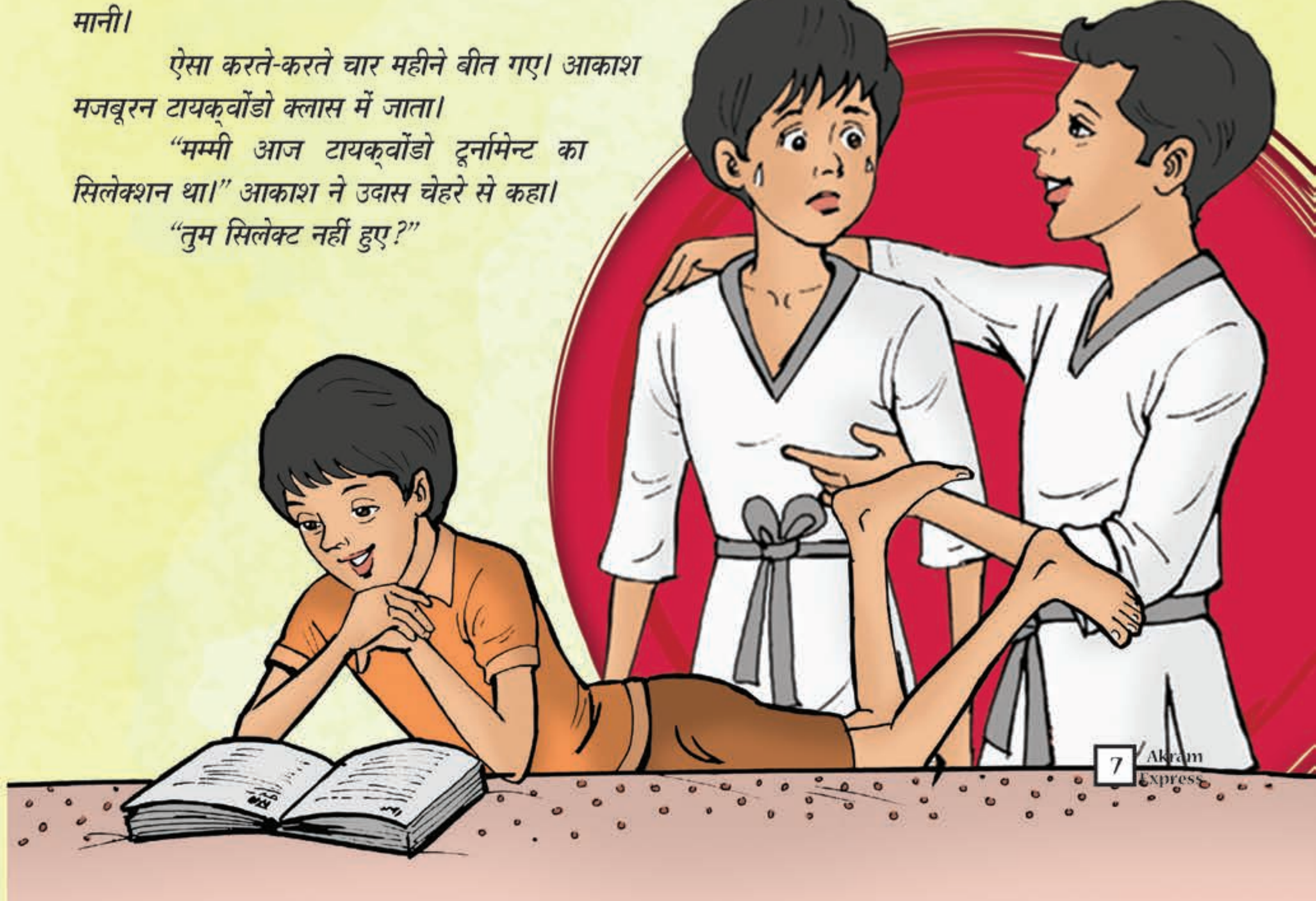

"सर ने तो मुझे सिलेक्ट किया है। मुझे अपने बराबर वज़न वाले लड़के के साथ खेलना है। पहले तो मुझे ऐसा था कि मेरे जितना दुबला

और कोई नहीं होगा इसलिए मेरा सिलेक्शन ही नहीं होगा लेकिन दूसरे क्लास में मेरे जितना ही एक दुबला लड़का है, उसके साथ मुझे खेलना पड़ेगा।

"तब तो अच्छा है न? तुम्हें भी चान्स मिल गया।"

"मुझे डर लग रहा है कि मुझे चोट लगी तो?"

"बेटा, तुम लोगों को सेफ्टी गार्डस पहनाकर ही खेलने देंगे ताकि चोट न लगे। तुम हार जाते हो फिर भी हर्ज नहीं है। तुम्हें एक टूर्नामेन्ट खेलने का अनुभव तो होगा न?"

रात को टेन्शन की वजह से उसे नींद भी नहीं आई और सुबह जब मम्मी ने उसे स्कबल जाने के लिए जगाया तब उसे बुखार था, इसलिए स्कूल जाना टल गया।

दो दिन बाद सर ने आकाश को स्टाफ रूम में मिलने के लिए बुलाया।

सर ने सख्ती से पूछा, "आकाश टूर्नामेन्ट के लिए क्यों नहीं आए?"

आकाश ने घबराते हुए कहा, " सर, मुझे बुखार था।"

सर ने आकाश की आँखों में देखकर उसकी तकलीफ समझ ली और उसे एक एलबम दिखाया जिसमें पिछले साल के टूर्नामेन्ट में जीतने वाले स्टूडेन्ट्स के फोटो थे।

"यह निराली दवे हैं। पिछले दो साल से वह टायकवोंडो में गोल्ड मेडल जीत रही है।"

"निराली....? यह तो कितनी दुबली लग रही है!" आकाश तुरंत ही बोल उठा।

"हाँ, टायक्वोंडो तो कोई भी वज़न वाले खेल सकते हैं और जीत भी सकते हैं। बस आपका स्ट्रोंग निश्चय होना चाहिए कि मुझे यह गेम अच्छी तरह सीख लेना है।"

"ओह।"

"पहले निराली भी हर बार जाती थी लेकिन फिर हारने के बावजूद भी वह अनुभव करती गई कि कौन-कौन सी गलती करने से वह हार जाती है और फिर दूसरी बार वह गलती रीपिट नहीं होने दी।"

"किस तरह हार जाते हैं, उसका अनुभव?"

"हाँ, जीतने वाले को जीत का नशा होता है जबकि हारने वाले को हार का अनुभव होता है और जीतने के लिए उसे वह अनुभव काम आता ही है। बात अलग है लेकिन सोचने जैसी है।"

सर से मिलने के बाद आकाश थोड़ा पॉज़िटिव हुआ। उसके बाद वह पॉज़िटिव रहकर हर एक टायक्वोंडो क्लास में एकाग्र चित्त से सब समझने और सीखने लगा। क्लास के अन्य लड़कों का मज़ाक उड़ाना चालू ही था लेकिन सर ने उस पर दिखाया हुए विश्वास ने

उसमें नया आत्मविश्वास जगा दिया। शुरुआत में प्रैक्टिस के दौरान वह हमेशा सामने वाले प्लेयर से हारता।

दो महीने के बाद फिर से टूर्नामेन्ट का समय आया।

"आकाश बेस्ट परफॉम करना। हारने में कोई बुराई नहीं है। जीतने के तुम्हारे प्रयत्न कैसे हैं वह महत्वपूर्ण है फिर तुम हार भी जाओगे तो मुझे हर्ज नहीं है।" मम्मी ने प्रेम और दृढ़ता से आकाश को खेलने भेजा।

जैसे ही वह खेलने के लिए आगे आया कि क्लास के कुछ बच्चों ने हँसना शुरू कर दिया।

और सभी को आश्चर्य में डालते हुए आकाश पहला राउन्ड जीत गया।

"वेल डन आकाश।" सर ने उसे प्रोत्साहित किया।

आकाश दूसरा राउन्ड भी जीत गया।

"मुझे सपना तो नहीं आ रहा न?" आकाश ने खुद को चुटकी भरकर देखा।

अब तीसरा राउन्ड.... जिसमें आकाश के सामने उससे ज्यादा वज़न वाले प्लेयर को ही उतारना पड़े ऐसा था। उसके बराबर वज़न वाले और कोई प्लेयर बचे नहीं थे।

"रहने दे, आकाश।" सर ने आकाश का कंधा थपथपाया और उसे आगे खेलने के लिए मना किया।

"प्लीज, सर। भले हार जाऊँ। मुझे एक चान्स दीजिए।"

"ओ.के." आकाश की तैयारी देखकर सर ने हाँ कह दिया।

लेकिन वज़न में ज्यादा अंतर होने की वजह से आकाश इस बार हार गया।

वह थोड़ा निराश हो गया लेकिन सर उससे खुश थे। बस यह हार ही आकाश की जीत की शुरुआत थी। तीन महीने के बाद फिर से टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया। आपको पता है कि उसका क्या परिणाम आया?

"कॉंग्रेच्युलेशन आकाश।" उसकी क्लास के सभी लड़के आकाश को घेरकर खड़े थे और उसे मिले हुए ब्रोंज मेडल को एकदूसरे के हाथ से खींचकर देखने लगे।

आकाश ने आज डायरी में लिखा... सेल्फ डिफेन्स की गेम ने मुझे सेल्फ कॉन्फिडेन्स सिखलाया है और हार से हुए अनुभवों ने मुझे सेल्फ नेगेटिविटी में से बाहर निकालकर पॉज़िटिविटी में जीना सिखलाया है।

चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ आकाश ने डायरी बंद कर दी और मेडल को हाथ में लेकर चूम लिया। हारने के बाद मिली जीत का आनंद ही कुछ और होता है। पहले जीत मन से तय होती है बाद में उसका परिणाम आता है। इसलिए मन से कभी भी नेगेटिव नहीं होना है।

एक सबक

सम्यक् और स्तवन जुड़वा भाई थे। सम्यक् शांत और कम बोलने वाला लड़का था। उसका भाई स्तवन उससे बिल्कुल अलग, ज्यादा चंचल और अपनी बढ़ाई मारने वाला था। स्तवन घर में और स्कूल में सभी जगह छा गया था जब कि सम्यक् के कुछ गुण अच्छे होते हुए भी वह सभी जगह कमज़ोर पड़ जाता था।

एक दिन स्कूल में मैथ्स की क्लास में टीचर ने सभी से किसी प्रश्न का जवाब देने के लिए कहा। सभी ने जवाब देना शुरू कर दिया लेकिन किसी का जवाब सही नहीं था।

सम्यक् के पास बैठे हुए वंदन ने कहा,"मुझे लगता है तेरा जवाब सही है।"

"नहीं...नहीं... मुझे नहीं लगता।" सम्यक् ने टीचर के सामने देखा और मन ही मन सोचने लगा, "पिछली बार जब मेरा जवाब गलत था तब पूरा क्लास मुझ पर हँस रहा था और टीचर भी गुस्सा हुए थे। मुझे फिर से सभी के सामने मज़ाक नहीं बनना।"

"तेरा क्या जवाब आया?" सम्यक् के दूसरी ओर बैठे हुए स्तवन ने पूछा।

"३९"

"तेरा?"

"मेरा तो ५६ आया है। तेरा तरीका ही गलत लग रहा है।" स्तवन ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"मैम, इसका जवाब ५६ है न?" स्तवन ने हाथ उठाकर कर ज़ोर से कहा।

"रोंग अन्सर।"

"लूज़र।" कुछ लड़के पीछे से

बोले।

"शट अप। तुम लोगों को भी कहाँ आता है?" स्तवन ने तुरंत ही उन लोगों को चुप कर दिया।

कुछ देर तक किसी का सही जवाब नहीं आया इसलिए स्तवन ने फिर से हाथ ऊँचा किया।

"यस।" टीचर ने उसे फिर से जवाब देने का चान्स दिया।

"३९?" स्तवन ने झिझकते हुए कहा।

"राईट। वेरी गुड, स्तवन।"

"येससस..." स्तवन ने मुट्ठी बंद करके अपनी नकली जीत दिखाते हुए कहा।

सम्यक् को झटका लगा। उसने वंदन के सामने देखा और फिर अपनी बुक में लिखे हुए सही जवाब "३९" पर नज़र डाली। यह जवाब तो उसने खुद ने ढूँढा था और सभी के बीच वाह-वाह स्तवन की हो गई।

तभी बेल बजा और क्लास खत्म हो गया। थोड़ी देर बाद ड्रॉइंग टीचर ईशिता मैम क्लास में आई।

"आज हम कार्टून स्क्रेच बनाना सीखेंगे। पिछली बार मैंने एक काम बताया था, वह किसी को याद है?"

"हाँ, मैम। आपने हमें वॉल्ट डिज़नी, अल्बर्ट आईन स्टाइन, हेनरी फोर्ड जैसे फेमस

लोगों के बारे में इन्फॉर्मेशन लाने के लिए कहा था।" काव्या ने तुरंत ही खड़े होकर कहा।

"मुझे यह बताओ कि इन सभी पर्सनेलिटी में कॉमन क्या है?"

"मैम, ये सभी वर्ल्ड फेमस हैं और बहुत पैसे वाले हैं।" स्तवन ने तुरंत ही कहा।

"ये सभी नॉन इंन्डियन हैं।" मनन के जवाब पर सभी हँस पड़े।

"इन सभी के जीवन में बहुत कठिनाईयाँ आने के बाद ये लोग सक्सेसफुल हुए थे।" काव्या ने कहा।

"ये सभी अपने जीवन में कई बार फेल हुए थे।" वंदन ने कहा।

"यु ऑल आर राईट। लेकिन मुझे आप सभी को जो समझाना है वह बात अलग है।"

"कौन सी बात, मेम?" हीर ने पूछा।

"इन सभी फेमस व्यक्तियों को जीवन में कई बार अपमान और असफलता का सामना करना पड़ा था। लोगों ने उनका स्वीकार नहीं किया था लेकिन एक चीज़ थी जो हर एक में कॉमन थी।"

"कौन सी चीज़?" स्तवन ने पूछा।

"लोगों ने उनका अस्वीकार किया लेकिन उन्होंने खुद अपने आप को अस्वीकार नहीं किया था।"

"अपने आप का अस्वीकार? अर्थात्?" काव्या ने पूछा।

अर्थात् सेल्फ नेगेटिविटी। खुद की आकृति, होशियारी, कुशलता, स्टेटस या अन्य संयोगों के कारण अपने आप को इन्फिरियर मान लेना यानी सेल्फ

नेगेटिविटी।”

“ऐसा सभी को तो नहीं होता न?” रेहाना ने पूछा।

“जब तक सब ठीक चलता है तब तक तो नहीं होता लेकिन जब जीवन में असफलता या अपमान का सामना करना पड़ता है तब होता है।”

“ऐसा तो हमें भी छोटे-बड़े प्रमाण में कहीं न कहीं होता ही है। तो किस तरह इसमें से बाहर निकल सकते हैं?” उर्मी ने अपने मन की बात बताई।

“वी ऑल आर डिफरन्ट एन्ड स्पेशल।”

“जो प्रयत्न करता है उसकी गलती होती है। कोई परफेक्ट नहीं होता है। गलतियाँ होती हैं वह गुनाह नहीं है। आगे नहीं बढ़ना, वह गुनाह है।“मैं निकम्मा हूँ” या “मेरे से यह नहीं होगा” खुद के लिए ऐसा मान लेना यह अपने आप को सेल्फ नेगेटिविटी रूपी हथियार से मारने के बराबर है। हम सभी का एक अलग अस्तित्व और व्यक्तित्व है और वह अमूल्य है। वी ऑल आर डिफरन्ट एन्ड स्पेशल।

पूरे पिरियड में सम्यक् चुप बैठा था लेकिन उसके चेहरे के भाव बहुत कुछ कह रहे थे। अपने आप को सेल्फ नेगेटिविटी के जाल में से मुक्त करने के लिए नए निश्चय कर रहा था। सम्यक् की आँखों में उसकी चमक दिख रही थी।

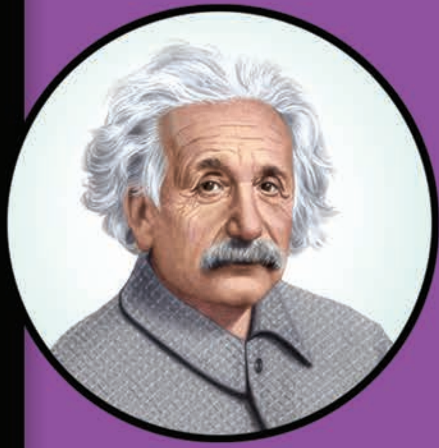

ऐतिहासिक गौरवगाथा

चंपा नगरी में कामदेव नामक बड़े सेठ रहते थे। वे बहुत बड़े धनिक थे अपने धन में से उन्होंने छः करोड़ धरती में गाड़ दिए थे, छः करोड़ व्यापार में निवेश किए थे और छः करोड़ घर, घर का सामान, वस्तु-आभूषण वगैरह के लिए खर्च किए थे। उनके दस-दस हज़ार गायों वाले छः गोकुल थे।

एक बार श्री महावीर स्वामी उस नगरी के पूर्णभद्र नामक देवालय में पधारे। सभी वीरप्रभु की वंदना करने जा रहे थे। यह देखकर कामदेव भी गया। वहाँ श्री वीरप्रभु को प्रणाम करके उनकी देशना सुनने बैठा। देशना सुनकर उसे संसार का सच्चा स्वरूप समझ में आया। उसने भगवान के पास से व्रतग्रहण किए ताकि वह संयमपूर्वक जीवन बीता सके। घर आकर उसने उल्लासपूर्वक अपनी पत्नी को सबकुछ बताया। यह सुनकर उसकी पत्नी ने भी प्रभु के पास जाकर व्रत अंगीकार किए।

निरंतर उत्तम ढंग से श्रावक धर्म का पालन करते हुए चौदह साल बीत गए। एक दिन में रात्रि को कामदेव ने सोचा, "घर का समग्र कामकाज पुत्रों पर छोड़कर अब मैं अपना जीवन धर्म के लिए ही बिताऊँ।" सुबह उठकर अपने पुत्रों को घर का सब कामकाज सौंपकर खुद एक रुम में श्री जिनेश्वर का ध्यान धरने लगे।

एक रात्रि को कामदेव ध्यान में बैठे थे। उस समय सौधर्मदेव ने अपनी सभा में कामदेव की प्रशंसा की। यह सुनकर कोई एक देव कामदेव की परीक्षा करने आए। दैवी शक्ति से कई भयंकर रूप धारण करके वह देव उन्हें डराने लगे। और कहा, "तुम धर्म छोड़ दो

वर्ना तीक्ष्ण हथियार से तुम्हें मारूँगा, तुम्हें बहुत पीड़ा होगी।

इस तरह उसने बार-बार कहा लेकिन सेठ को ज़रा भी डर नहीं लगा। देव ने क्रोध से उन पर खड्ग का प्रहार किया, फिर भी सेठ डिगे नहीं। तब उसने एक भयानक हाथी का रूप धारण किया और उन्हें आकाश में उछाला। फिर ज़हरीले साँप का रूप धारण करके बहुत डंक मारे। फिर भी सेठ डिगे नहीं और ध्यान करना छोड़ा नहीं। मन में श्री महावीर भगवान का स्मरण करते हुए वे शुभ ध्यान में ही रहें।

अंत में देव ने उनके पैर छूकर माफी माँगी तब ही देव को भी आत्मज्ञान प्राप्त हुआ।

यों धर्म का पालन करते कामदेव सेठ ने आयुष्य पूरा किया और देवगति प्राप्त की। देवगति का आयुष्यपूर्ण कर वे महाविदेहक्षेत्र में जन्म लेकर वहाँ से मोक्ष जाएँगे।

धन्य है कामदेव सेठ जो भयंकर उपसर्ग के समय धर्म में स्थिर रहें, जिनकी प्रशंसा प्रत्यक्ष महावीर प्रभु ने की।

रियल लाइफ

लोग उन्हें "एलियन फेस" कहकर चिढ़ाते थे। बचपन से ही वे सभी के मज़ाक का कारण बन गए थे, जिसका कारण था, तोतलापन (बोलने में एक प्रकार की खराबी)। उनका दोस्त बनने के लिए कोई तैयार नहीं था इसलिए करीब-करीब सारा बचपन ही उनका अकेलेपन में ही बीता। बड़े होने के बाद उन्हें ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी जैसी प्रसिद्ध जगह एडमिशन मिल गया।"

रोवन को एक्टिंग में भी रूचि थी लेकिन तोतलेपन की वजह से अच्छा परफॉमन्स् नहीं कर पाते थे। हर तरफ से उन्हें तिरस्कार ही मिला। सभी ओर से मिलने वाले अपमान, अस्वीकार और निराशा ने उन्हें दुःखी ज़रूर किया लेकिन कोई उनका आत्मविश्वास डिगा नहीं पाया। अपने सपने पूरे करने का उनका निश्चय स्ट्रोंग था।

अंत में रोवन ने रेडियो कम्पनी के साथ अपना केरिअर बनाना तय किया। १० सालों तक उन्होंने एक बालक जैसे केरेक्टर का रोल अदा करके अपनी नई छबि बनाई। किसी भी नाम के बिना एक मूर्ख व्यक्ति बालक जैसा रोल करके रोवन लोगों को पेट पकड़कर हँसाने लगे उनके जीवन की यह पहली सफलता थी। उसके बाद टेलीविज़न की दुनिया में पहुँचकर उन्होंने अपना शो "मिस्टर बीन "शुरू किया जिसे बहुत ही कम समय में पूरी दुनिया में सफलता मिली।

एक्टिंग द्वारा रोवन अपने आप को तोतलेपन की कमी ही उनके लिए फायदेमंद साबित हुई।

आज उन्होंने विश्व प्रसिद्ध कोमेडियन के तौर पर अपना स्थान जमा लिया है। उनके पास १३० मिलियन डॉलर की संपत्ति है। हर जगह से तिरस्कृत एक बालक का रोवन से लेकर "मिस्टर बीन" बनने तक का यह सफर हमें सिखलाता है कि, "यदि निश्चय और आत्म विश्वास पक्का हो तो दुनिया की कोई शक्ति हमें अपना सपना साकार करने से रोक नहीं सकती। सफल होने के लिए सुंदर दिखावे की नहीं लेकिन हारे बिना लगातार प्रयत्न करने की ज़रूरत होती है।"

My Creation

मैं कठिनाईयों में निराश नहीं होऊँगा।

मैं असफलता को अनुभव समझूँगा।

मैं घबराऊँगा नहीं।

मैं नेगेटिविटी में हार नहीं मानूँगा।

शेर की तरह स्ट्रोंग बनूँगा।

मकड़ी की तरह फिर से प्रयत्न करूँगा।

गोताखोर की तरह धीरे-धीरे प्रयत्न करना जारी रखूँगा।

किसान की तरह प्रार्थना करूँगा।

इंडियन वैज्ञानिकों की तरह फिर से मेहनत करूँगा।

और क्वोका की तरह हमेशा स्माइल करूँगा।

डोंकी की तरह, अपमान आए तो भी प्रयत्न करूँगा।

लेकिन बड़ों की मदद लेकर आगे बढ़ूँगा।

मैं असफलता में दु:खी नहीं होऊँगा।

मैं नापसंद काम करने के लिए ट्राय करूँगा।

मैं नेगेटिव नहीं होऊँगा।

मैं नेगेटिव नहीं होऊँगा।

चलो खेलें....

नीचे दिए चित्र में से छूपे
हुए सात शब्दों को ढूँढो...

Information on 'Akram Express' Monthly Magazine - Form 4 (Rule No. 8)
1. Place of Publication: Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. Periodicity of its Publication: Monthly
3. Printers Name: Amba Offset Nationality: Indian
Address: B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025
4. Publisher's Name: Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation Nationality: Indian
Address: Simandhar City, Adalaj – 382421, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. Editor's Name: Dimple Mehta Nationality: Indian Address: Same as above
6. Name of Owner: Mahavideh Foundation Nationality: Indian Address: Same as above
I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.
Date: 08-03-2020, Ahmedabad

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

Akram Express

March 2020
Year : 07, Issue : 12
Conti. Issue No.: 85

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

और अंत में ...

एक जानेमाने स्पीकर ने अपना सेमिनार शुरू करने से पहले सभी को २००० रुपये का नोट दिखाया। रूम में २०० लोग बैठे थे। स्पीकर ने पूछा, "यह २००० रुपये किसे चाहिए?"

एक के बाद एक, लोगों के हाथ उठने लगे।

"आप में से एक व्यक्ति को मैं यह २००० रुपये दूँगा लेकिन पहले मुझे एक काम करना है।" ऐसा कहकर उन्होंने २००० रुपये के नोट को बुरी तरह से मोड़ दिया।

"अभी भी कितने लोगों को इस नोट में रूचि है?"

इस सवाल के बाद भी लोगों के हाथ उठे हुए ही थे।

"और अगर मैं ऐसा करूँ तो?" ऐसा कहकर उन्होंने नोट को ज़मीन पर फेंककर अपने शूज़ से उसे घिसने लगे।

फिर उन्होंने वह नोट उठाकर सभी को दिखाया। नोट मुड़ा हुआ और गंदा हो गया था। "अभी भी किसे इसमें रूचि है?"

ऐसे खराब हो गए २००० के नोट के लिए अभी भी लोगों के हाथ उठे हुए ही थे।

"मित्रो, आज आप सभी ने एक महत्वपूर्ण सबक सीखा है। दो हज़ार रुपये के नोट की हालत इतनी खराब होने के बावजूद भी उसकी वैल्यू कम नहीं होती है। इसी तरह कोई भी व्यक्ति बाहर से चाहे कितना भी खराब दिखता हो लेकिन उसके अंदर भी पूर्ण ज्ञान स्वरूप भगवान बसे हुए हैं। अतः किसी भी व्यक्ति को डिवैल्यू नहीं करना चाहिए।"

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर संपर्क करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025